मेहनतकशों का पैग़ाम

मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- करनाल शुगर मिल में बिकती हैं नौकरियां
- बढता जा रहा है सट्टेबाज़ों व ड्रग माफ़िया का धंधा — 3
- इमरजेंसी और मोदी सरकार
- जंग-ए नजीब है कितनी अजीब — 5
- पूंजीवाद की नव उदारवादी नीतियों का परिणाम चिली का छात्र आंदोलन — 6
- वकीलों की टांय-टांय फिस्स हड़ताल को खुलवाने पहुंचे मन्त्री जी — 8

वर्ष 28 अंक 17 फरीदाबाद, बुधवार, 1-15 जुलाई 2015 फोन : - 9999595632 2 ₹

यक्ष : मानवता क्या है।
युधिष्ठिर : मानवता, मन को मुदित करने वाली--ललित कला है,
शास्त्रों में इसका सार्वजनिक प्रदर्शन निषिद्ध किया गया है,
इसे स्वान्तः सुखाय अभ्यास करने की परम्परा है, फिर भी, यदि कभी
इसका सार्वजनिक प्रदर्शन होता है तब इसकी सुषमा देखते ही बनती है।

ये जीवन - पाठशाला पाठ रोजाना पढाती है
यहां खुद जिन्दगी इंसान को सब कुछ सिखाती है।
पसीना पोछता गमछे से इक मजदूर ये बोला
सुबह से शाम तक रोटी सभी आसन कराती है।
- रघुवंशी

आप करें आसन, हम करें शासन

भाइयो और बहनो पांच साल रहेगा मोदी का यही हाल

भगवा ब्रिगेड के बस में स्वयं तो कोई किला बनाना है नहीं। लिहाज़ा वे जिस क्षेत्र में भी कोई मजबूत किला देखते हैं उस पर झंडा गाड़ने को बेकरार हो जाते हैं। भाजपा की मोदी सरकार ने आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में कांग्रेसी किलों पर ही नये सिरे से अपने झंडे गाड़ने का कार्यक्रम चला ही रखा है। अब उनकी इन्तहा का ही नमूना है कि सांस्कृतिक क्षेत्र में पारंपरिक योग के सर्वमान्य किले को भी उन्होंने नहीं बख्शा। इसे भगवा झंडे के नीचे लाने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) पर ख़ाकी निकर वालों ने जैसी कवायद की उससे लगता है जैसे इनके अहसान के बिना समाज में योग का कोई स्थान ही नहीं होता।

मज़दूर मोर्चा, दिल्ली ब्यूरो

सारे देश में भाजपाई मन्त्रियों व संघी पदाधिकारियों को योग दिवस पर एक टांग उठा कर देश और समाज को धन्य करते सभी ने देखा होगा। हालांकि पार्टी अध्यक्ष अमित शाह के बस में इतना भी नहीं था, लिहाज़ा उन्होंने योग के नाम पर अपने चमचों के बीच जाकर बमुश्किल एक हाथ हिलाया। इस अवसर पर जनता के लिये सरकारी संदेश स्पष्ट था-तुम्हारे जिम्मे आसन है, हमारे जिम्मे शासन है।

योगासनों को प्रधानमंत्री मोदी तक ने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की कुंजी बना कर पेश करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। समझ में नहीं आता कि भाजपा और संघ के बड़े-बड़े नेता स्वयं स्वास्थ्य लाभ के लिये पंचतारा अस्पतालों में ही क्यों जाते हैं? यहां तक कि गडकरी और जेटली ने बजाय योग के माध्यम से अपना वजन घटाने के खर्चीली कॉस्मेटिक सर्जरी कराना क्यों जरूरी समझा? क्यों नहीं एम्स जैसे अस्पतालों के विशिष्ट वार्डों को योग स्थलों में बदल दिया जाता जहां राजनेता और अफ़सरशाह सरकारी खर्च पर महंगे से महंगा इलाज कराते हैं? रामदेव जैसे तमाम योग व्यापारियों की हिम्मत क्यों नहीं पड़ती कि वे तमाम तरह के रोगों के योग से इलाज के अपने दावे अमेरिका और यूरोप के देशों में भी ले जाते?

जाहिर है हिन्दुस्तान की निरीह जनता को ही सरेआम उल्लू बनाया जा सकता है। मोदी सरकार ने स्वास्थ्य बजट में 17 प्रतिशत कटौती कर दी है। सरकारी अस्पताल पूरी तरह विफल हो चुके हैं। वहां न ढंग के पर्याप्त डॉक्टर हैं न दवाइयां उपलब्ध होती हैं। प्राइवेट अस्पतालों को मरीज़ों की लूट का लाइसेंस मिला हुआ है। दवा कम्पनियों की मुनाफ़ाखोरी का विकट जाल सरकारों से संभाले नहीं संभल रहा। ऐसे में योग को हर मर्ज का इलाज बता कर वही सरकार पेश कर सकती है जिसको जनता के स्वास्थ्य से कुछ लेना-देना न हो।

उधर जनता आसन करती रहे और इधर राजनेता शासन की मलाई खाते रहे। केन्द्रीय गृह मन्त्री राजनाथ सिंह ने तो कह ही दिया कि भाजपा नीत एनडीए सरकार में भ्रष्ट से भ्रष्ट मन्त्री भी इस्तीफ़ा नहीं देगा। आखिर वे राज करने आये हैं इस्तीफ़ा देने नहीं। जनता ने उन्हें पांच साल के लिये चुना है, लिहाज़ा 5 साल के लिये उनकी किसी के प्रति कोई जवाब देही नहीं है।

भ्रष्टाचार ही नहीं, काला धन, बेरोजगारी, महंगाई कानून व्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, यानी कि हर क्षेत्र में बस जनता को उनके दावे और नारे सुनने व स्वीकारने चाहियें। किसी को कोई टुकड़ा मिल जाय तो ठीक वरना दुनिया को अपनी गति से चलना ही है। तथाकथित योगियों के दम पर भाजपाईयों की सत्ता-आकांक्षा कितनी फ़लीभूत होगी यह तो समय ही बतायेगा। दिल्ली चुनाव में मोदी समेत तमाम नारेबाज 'योगियों' के मुंह पर कालिख पुत चुकी है। बिहार चुनाव भी अधिक दूर नहीं हैं। आसार हैं कि वहां यह कालिख और गहरायेगी।

ख़बर दार

नमो नमो नहीं लमो लमो

आईपीएल के भगोड़े ललित मोदी को आसानी से भारत में काले धन की बीमारी का प्रतिनिधि कहा जा सकता है। सर्वविदित है कि भारत रत्न सचिन तेंदुलकर का खेल 'क्रिकेट' सट्टेबाजारी का अखाड़ा बना दिया गया है। इस अखाड़े में राजनेता और उद्योगपति ही नहीं क्रिकेट जगत के बड़े सितारे भी ताल ठोंकते हुए देखे जा सकते हैं। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी, वित्त मन्त्री अरुण जेटली, कांग्रेसी सरकार के धुरंधर शरद पवार जैसे राजनेता भी इस कीचड़ में पूरी तरह सने रहे हैं। ललित मोदी और राजीव शुक्ला जैसे बिचौलियों का कद भी इस कदर बढता गया कि वे सारे क्रिकेट जगत को अपनी ऊंगलियों पर नचाने लगे। श्रीनिवासन और डालमिया जैसे उद्योगपतियों ने क्रिकेट बोर्ड को अपनी बपौती बना लिया। ऐसे में क्या ताज्जुब कि ललित मोदी जैसे शातिर के तरकश से बड़े बड़ों को नीचा दिखाने वाले तीर निकल रहे हैं। उनसे एक काल्पनिक साक्षात्कार।

म.मो.-कहते हैं आपकी हर पार्टी में घुसपैंठ है ललित मोदी जी? आपने सैंकड़ों करोड़ की काली कमाई बेशक की हो पर इसी लिये कोई आपका बाल भी बांका नहीं कर पाया है?

ललित मोदी-यह तो इन बेवकूफ़ राजनीतिकों को समझना चाहिये जो मेरी आड़ में एक-दूसरे को नीचा दिखा रहे हैं। ये आरोप लगाने वाले शायद भूल रहे हैं कि 'ललित हमाम' में सभी नंगे हैं। आज भाजपाइयों का नम्बर लगा हुआ है तो कल कांग्रेसियों और दूसरों का भी लगेगा।

म.मो.- इतने राजनेताओं का समर्थन आपने कैसे हासिल कर लिया? राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया आपके लिये शपथपत्र दे रही हैं जबकि भारत की विदेश मन्त्री सुषमा स्वराज सिफ़ारिशी पत्र भेज रही हैं। आप कोई जादू-टोना जानते हैं क्या?

ललित मोदी-हमारा तो एक ही जादू-टोना है और वह है पैसा। जितना काला हो उतना अच्छा। हम खाने के साथ -साथ खिलाने और बांटने में यकीन करते हैं। आपने देखा नहीं कि कैसे वसुंधरा राजे के बेटे और सुषमा की बेटी को हमने मोटा पैसा पहुंचाया और वह भी बिना किसी से छिपाये।

म.मो.-क्या आपको डर नहीं लगता कि आज नहीं तो कल आपको भारत आना ही पड़ेगा। उस हालत में भारत की न्याय व्यवस्था और काला धन पकड़ने वाले तमाम विभाग आपको छोड़ेंगे नहीं।

ललित मोदी-अरे छोड़िये साहब। इसी न्याय वयवस्था ने मेरा पासपोर्ट बहाल किया था। और काला धन पकड़ने वाली एजेंसियों ने आज तक कभी मुझे ब्रिटेन में तंग नहीं किया। ये आगे भी इसी तरह मुझ पर मेहरबान रहेंगी।

म.मो.-आपकी जान को खतरा किससे है? सुना है आजकल के मुंबई पुलिस कमिश्नर राकेश मारिया ने लंदन आकर आपको सुरक्षा के प्रति आश्वस्त किया था।

ल.मो.-अरे ये सब प्रेस में कहने वाली बातें हैं। मुझे किससे ख़तरा हो सकता है? उल्टे भारत के तमाम राजनीतिकों को मुझसे ही खतरा है कि कहीं मैं उनकी पोल न खोल दूं। पुलिस कमिश्नर मारिया को भी यही डर सता रहा होगा। आखिर ये सभी मेरी जेब में हुआ करते थे। मैं आपके पत्र के माध्यम से इन्हें आश्वस्त करना चाहता हूं कि पहले की तरह ये मेरा ख्याल रखें और मैं भी इनका ख्याल रखता र हूंगा।

म.मो.-जनता? क्या आपको भारत की जनता से डर नहीं लगता? वह आपसे पूरा हिसाब-किताब मांगेगी कि नहीं?

ललित मोदी-अरे छोड़िये भी। जनता को तो खुद उसके नेता नहीं पूछते। फ़िर वह भला मुझे क्या पूछेगी? मत भूलिये कि जनता को सट्टेबाजी का मौका मैंने ही उपलब्ध कराया और इसलिये जनता मेरी ऋणी है।

योग दिवस : ख़ूब चलीं भगवा दुकानें

फ़रीदाबाद (म.मो.) भाजपा सरकार ने 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस क्या घोषित करा दिया, मोदी जी के भक्तों के तो पांव ही ज़मीन पर नहीं पड़ रहे हैं। मानों दुनिया मुट्ठी में करली। भारत दुनिया का सिरमौर हो गया। योग दिवस पर, न केवल भारत भर में बल्कि दुनिया भर के देशों में योग कराने का मानो ठेका उठा लिया हो। भारत सरकार का कोई मन्त्री किसी शहर में योग की डुगडुगी बजा रहा है तो कोई किसी में। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने तो अमेरिका में जा मजमा लगाया।

हर शहर में, एक नहीं, अनेकों 'योगीराज' 'महाराज' 'कुकरमुत्तों' की तरह पैदा हो गये। कोई भी अपने आपको योग प्रशिक्षक कहला कर राज़ी नहीं, सभी अपने आप को महा सिद्ध पुरूष बताने की होड़ में जुटे नज़र आज आते हैं। विशेष प्रकार की वेश-भूषा व शक्ल सूरत में अपने आप को भगवान का असली एजेंट साबित करने का हर संभव प्रयास करते नज़र आते हैं। हर प्रकार की बीमारी के पुख्ता इलाज के अतिरिक्त मरने के बाद मुक्ति प्रदान करने तक का दावा करते हैं। ना-ना करते हुए भी धर्म की पूरी दुकानदारी चलाने से बाज़ नहीं आते।

योग के तमाम आसन शारीरिक व्यायाम की एक बेहतरीन पद्धति है तथा योग क्रियायें शरीर का भीतरी शोधन करने के उपाय के रूप में जमाने से हैं। इनको प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता एवं आवश्यकतानुसार बड़े आराम से कर सकता है। इनके नियमों एवं तौर-तरीकों को एक बार समझना बहुत जरूरी है। जिसे पुस्तकों एवं अच्छे प्रशिक्षकों द्वारा बड़ी सरलता से समझा व सीखा जा सकता है। किसी भी व्यायाम की तरह इसे निजी अथवा सामुहिकतौर पर किया जा सकता है। इसके लिये योगीराजों अथवा महाराजों की कोई आवश्यकता नहीं होती।

भारत सरकार के अलावा तमाम भाजपाई राज्य सरकारों ने इस एक दिवसीय आयोजन के लिये अच्छे खासे बजट निर्धारित किये। प्रत्येक ज़िला स्तर पर ज़िलाधिकारियों ने मोटा पैसा खर्च कर के अनेकों जगह योग प्रदर्शनियां लगाई। इसके लिये हफ़्तों पहले से तैयारियां शुरू कर दी गयी थी। कुल मिलाकर योग जैसी एक अच्छी खासी बेहद प्रचलित व्यायाम पद्धति को मोदी ने भगवा पाखंड का रूप दे डाला। यहां तक कि विवादास्पद बना डाला। मज़े की बात तो यह है कि वे इसी को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि बता रहे हैं और भक्तों से गुणगान करा रहे हैं।